



M

31 Mar 2024

03:17 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120672801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 31/03/2024
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 15:17:00 घंटे
इष्ट _____: 22:41:47 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 14:55:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:32:55 घंटे
सूर्योदय _____: 06:12:17 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:38:36 घंटे
दिनमान _____: 12:26:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 16:58:25 मीन
लग्न के अंश _____: 03:39:00 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: व्यतिपात
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: यी-यीशा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	चैत्र	11
पंजाबी	संवत : 2080	चैत्र	18
बंगाली	सन् : 1430	चैत्र	17
तमिल	संवत : 2080	पंगुनी	18
केरल	कोल्लम : 1199	मीनम	18
नेपाली	संवत : 2080	चैत्र	18
चैत्रादि	संवत : 2080	चैत्र	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2080	फाल्गुन	कृष्ण 6

पंचांग

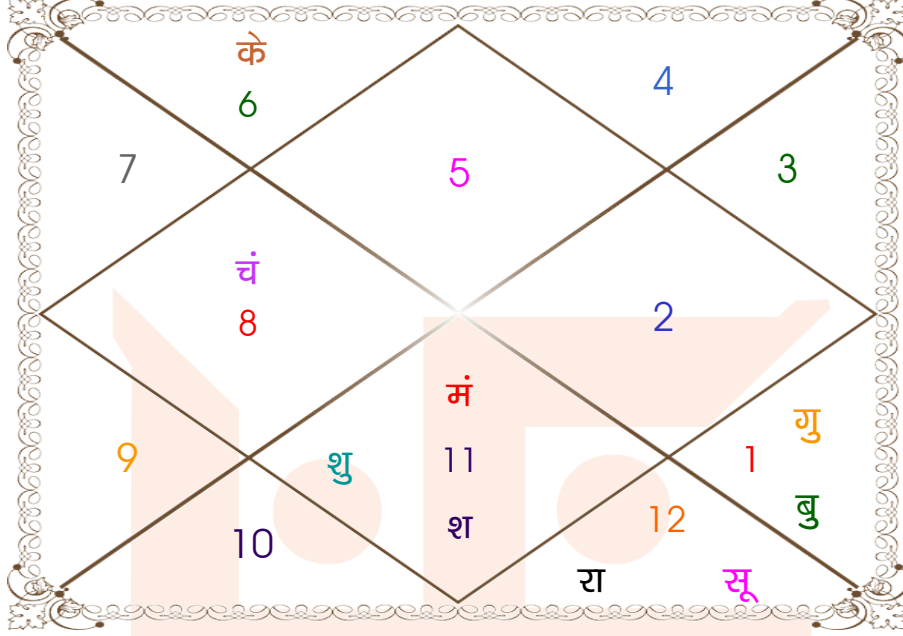
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:31:16
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 22:56:29 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 21:52:31 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 09:27:18 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 43:03:59
भभोग _____ : 62:12:41
भोग्य दशा काल _____ : बुध 5 वर्ष 3 मा 9 दि

घात चक्र

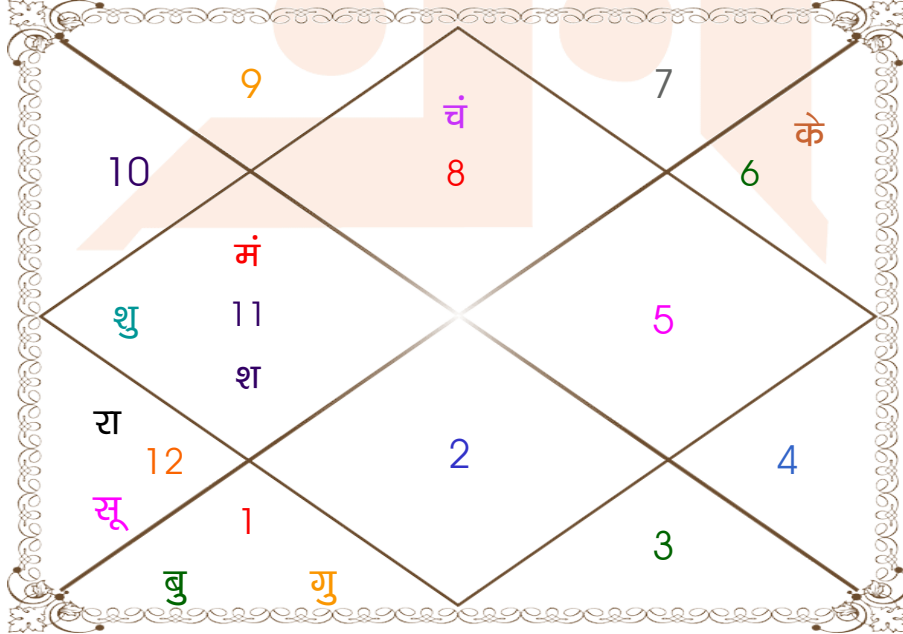
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा सू	गु बु		
श मं शु			
			ल
	चं		के

लग्न कुंडली

	गु बु	रा सू	श मं शु
ल			
के		चं	

विंशोत्तरी
बुध 5वर्ष 3मा 9दि
बुध

31/03/2024

11/07/2132

बुध	10/07/2029
केतु	10/07/2036
शुक्र	10/07/2056
सूर्य	11/07/2062
चन्द्र	10/07/2072
मंगल	11/07/2079
राहु	10/07/2097
गुरु	11/07/2113
शनि	11/07/2132

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 6मा 18दि
उल्का

19/10/2025

19/10/2031

उल्का	19/10/2026
सिद्धा	19/12/2027
संकटा	19/04/2029
मंगला	19/06/2029
पिंगला	19/10/2029
धान्या	20/04/2030
भ्रामरी	19/12/2030
भद्रिका	19/10/2031

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

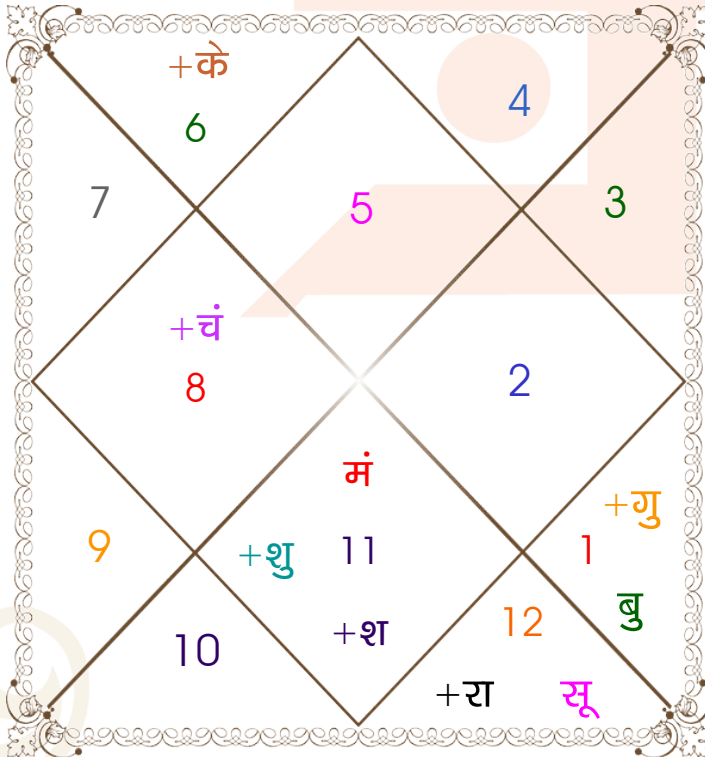
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	03:39:00	311:30:32	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	---
सूर्य			मीन	16:58:25	00:59:14	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	25:51:43	12:55:07	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	नीच राशि
मंगल			कुंभ	12:21:20	00:46:42	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
बुध			मेष	02:53:09	00:11:00	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
गुरु			मेष	23:01:56	00:12:50	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			कुंभ	29:55:25	01:14:10	पूर्वाभाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
शनि			कुंभ	19:20:17	00:06:47	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण
राहु			मीन	21:25:27	00:00:08	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
केतु			कन्या	21:25:27	00:00:08	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	26:33:47	00:02:51	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	---
नेप			मीन	03:41:24	00:02:14	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	07:39:46	00:00:54	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			वृष	01:22:07	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	--

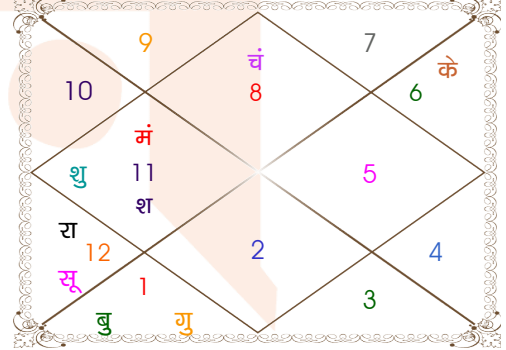
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:40

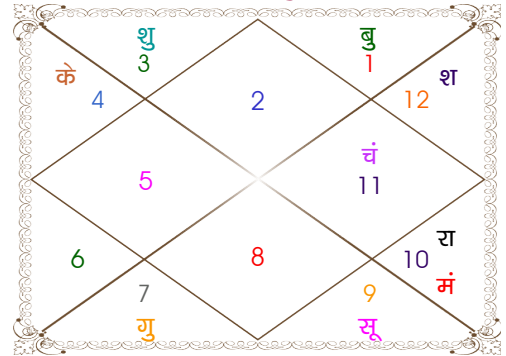
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 18:16:11	सिंह 03:39:00
2	सिंह 18:16:11	कन्या 02:53:22
3	कन्या 17:30:34	तुला 02:07:45
4	तुला 16:44:56	वृश्चिक 01:22:07
5	वृश्चिक 16:44:56	धनु 02:07:45
6	धनु 17:30:34	मकर 02:53:22
7	मकर 18:16:11	कुम्भ 03:39:00
8	कुम्भ 18:16:11	मीन 02:53:22
9	मीन 17:30:34	मेष 02:07:45
10	मेष 16:44:56	वृष 01:22:07
11	वृष 16:44:56	मिथुन 02:07:45
12	मिथुन 17:30:34	कर्क 02:53:22

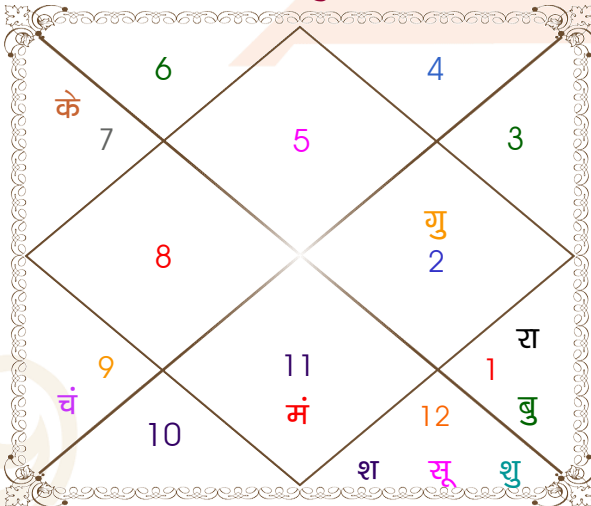
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	03:39:00
2	सिंह	29:26:03
3	कन्या	29:06:31
4	वृश्चिक	01:22:07
5	धनु	03:46:45
6	मकर	04:42:22
7	कुम्भ	03:39:00
8	कुम्भ	29:26:03
9	मीन	29:06:31
10	वृष	01:22:07
11	मिथुन	03:46:45
12	कर्क	04:42:22

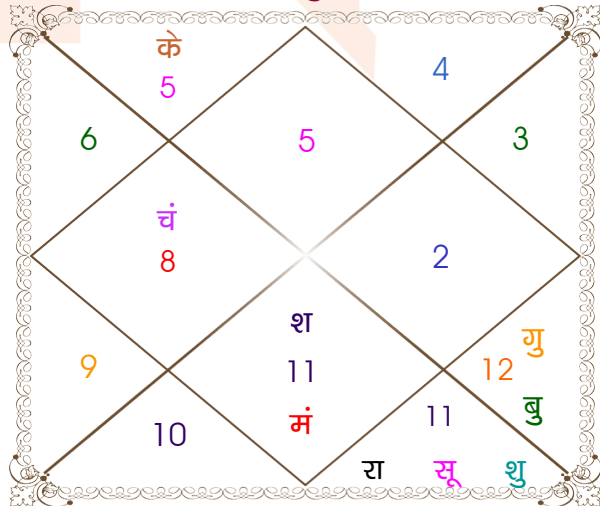
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 3 मास 9 दिन

बुध 17 वर्ष 31/03/2024 10/07/2029	केतु 7 वर्ष 10/07/2029 10/07/2036	शुक्र 20 वर्ष 10/07/2036 10/07/2056	सूर्य 6 वर्ष 10/07/2056 11/07/2062	चंद्र 10 वर्ष 11/07/2062 10/07/2072
00/00/0000	केतु 06/12/2029	शुक्र 10/11/2039	सूर्य 28/10/2056	चंद्र 11/05/2063
00/00/0000	शुक्र 06/02/2031	सूर्य 09/11/2040	चंद्र 28/04/2057	मंगल 10/12/2063
00/00/0000	सूर्य 13/06/2031	चंद्र 11/07/2042	मंगल 03/09/2057	राहु 10/06/2065
00/00/0000	चंद्र 12/01/2032	मंगल 10/09/2043	राहु 29/07/2058	गुरु 10/10/2066
00/00/0000	मंगल 10/06/2032	राहु 09/09/2046	गुरु 17/05/2059	शनि 10/05/2068
31/03/2024	राहु 28/06/2033	गुरु 10/05/2049	शनि 28/04/2060	बुध 10/10/2069
राहु 25/07/2024	गुरु 04/06/2034	शनि 10/07/2052	बुध 04/03/2061	केतु 11/05/2070
गुरु 31/10/2026	शनि 14/07/2035	बुध 11/05/2055	केतु 10/07/2061	शुक्र 09/01/2072
शनि 10/07/2029	बुध 10/07/2036	केतु 10/07/2056	शुक्र 11/07/2062	सूर्य 10/07/2072
मंगल 7 वर्ष 10/07/2072 11/07/2079	राहु 18 वर्ष 11/07/2079 10/07/2097	गुरु 16 वर्ष 10/07/2097 11/07/2113	शनि 19 वर्ष 11/07/2113 11/07/2132	बुध 17 वर्ष 11/07/2132 00/00/0000
मंगल 06/12/2072	राहु 23/03/2082	गुरु 28/08/2099	शनि 14/07/2116	बुध 08/12/2134
राहु 25/12/2073	गुरु 16/08/2084	शनि 12/03/2102	बुध 24/03/2119	केतु 05/12/2135
गुरु 01/12/2074	शनि 22/06/2087	बुध 17/06/2104	केतु 02/05/2120	शुक्र 05/10/2138
शनि 09/01/2076	बुध 09/01/2090	केतु 24/05/2105	शुक्र 03/07/2123	सूर्य 11/08/2139
बुध 06/01/2077	केतु 27/01/2091	शुक्र 23/01/2108	सूर्य 14/06/2124	चंद्र 10/01/2141
केतु 04/06/2077	शुक्र 27/01/2094	सूर्य 10/11/2108	चंद्र 13/01/2126	मंगल 07/01/2142
शुक्र 04/08/2078	सूर्य 22/12/2094	चंद्र 12/03/2110	मंगल 22/02/2127	राहु 01/04/2144
सूर्य 10/12/2078	चंद्र 22/06/2096	मंगल 16/02/2111	राहु 29/12/2129	00/00/0000
चंद्र 11/07/2079	मंगल 10/07/2097	राहु 11/07/2113	गुरु 11/07/2132	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 5 वर्ष 2 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 25/07/2024 31/10/2026	बुध - शनि 31/10/2026 10/07/2029	केतु - केतु 10/07/2029 06/12/2029	केतु - शुक्र 06/12/2029 06/02/2031	केतु - सूर्य 06/02/2031 13/06/2031
गुरु 13/11/2024 शनि 24/03/2025 बुध 19/07/2025 केतु 05/09/2025 शुक्र 21/01/2026 सूर्य 04/03/2026 चंद्र 12/05/2026 मंगल 29/06/2026 राहु 31/10/2026	शनि 05/04/2027 बुध 22/08/2027 केतु 18/10/2027 शुक्र 30/03/2028 सूर्य 18/05/2028 चंद्र 08/08/2028 मंगल 05/10/2028 राहु 01/03/2029 गुरु 10/07/2029	केतु 19/07/2029 शुक्र 13/08/2029 सूर्य 20/08/2029 चंद्र 02/09/2029 मंगल 10/09/2029 राहु 03/10/2029 गुरु 23/10/2029 शनि 15/11/2029 बुध 06/12/2029	शुक्र 15/02/2030 सूर्य 09/03/2030 चंद्र 13/04/2030 मंगल 08/05/2030 राहु 11/07/2030 गुरु 06/09/2030 शनि 12/11/2030 बुध 12/01/2031 केतु 06/02/2031	सूर्य 12/02/2031 चंद्र 23/02/2031 मंगल 02/03/2031 राहु 21/03/2031 गुरु 07/04/2031 शनि 27/04/2031 बुध 16/05/2031 केतु 23/05/2031 शुक्र 13/06/2031
केतु - चंद्र 13/06/2031 12/01/2032	केतु - मंगल 12/01/2032 10/06/2032	केतु - राहु 10/06/2032 28/06/2033	केतु - गुरु 28/06/2033 04/06/2034	केतु - शनि 04/06/2034 14/07/2035
चंद्र 01/07/2031 मंगल 14/07/2031 राहु 15/08/2031 गुरु 12/09/2031 शनि 16/10/2031 बुध 15/11/2031 केतु 27/11/2031 शुक्र 02/01/2032 सूर्य 12/01/2032	मंगल 21/01/2032 राहु 13/02/2032 गुरु 03/03/2032 शनि 27/03/2032 बुध 17/04/2032 केतु 26/04/2032 शुक्र 21/05/2032 सूर्य 28/05/2032 चंद्र 10/06/2032	राहु 06/08/2032 गुरु 26/09/2032 शनि 26/11/2032 बुध 19/01/2033 केतु 11/02/2033 शुक्र 16/04/2033 सूर्य 05/05/2033 चंद्र 06/06/2033 मंगल 28/06/2033	गुरु 13/08/2033 शनि 06/10/2033 बुध 23/11/2033 केतु 13/12/2033 शुक्र 08/02/2034 सूर्य 25/02/2034 चंद्र 25/03/2034 मंगल 14/04/2034 राहु 04/06/2034	शनि 07/08/2034 बुध 03/10/2034 केतु 27/10/2034 शुक्र 03/01/2035 सूर्य 23/01/2035 चंद्र 25/02/2035 मंगल 21/03/2035 राहु 21/05/2035 गुरु 14/07/2035
केतु - बुध 14/07/2035 10/07/2036	शुक्र - शुक्र 10/07/2036 10/11/2039	शुक्र - सूर्य 10/11/2039 09/11/2040	शुक्र - चंद्र 09/11/2040 11/07/2042	शुक्र - मंगल 11/07/2042 10/09/2043
बुध 03/09/2035 केतु 24/09/2035 शुक्र 24/11/2035 सूर्य 12/12/2035 चंद्र 11/01/2036 मंगल 01/02/2036 राहु 26/03/2036 गुरु 14/05/2036 शनि 10/07/2036	शुक्र 29/01/2037 सूर्य 31/03/2037 चंद्र 10/07/2037 मंगल 19/09/2037 राहु 21/03/2038 गुरु 30/08/2038 शनि 11/03/2039 बुध 30/08/2039 केतु 10/11/2039	सूर्य 28/11/2039 चंद्र 28/12/2039 मंगल 19/01/2040 राहु 13/03/2040 गुरु 01/05/2040 शनि 28/06/2040 बुध 19/08/2040 केतु 09/09/2040 शुक्र 09/11/2040	चंद्र 29/12/2040 मंगल 03/02/2041 राहु 05/05/2041 गुरु 25/07/2041 शनि 30/10/2041 बुध 24/01/2042 केतु 01/03/2042 शुक्र 10/06/2042 सूर्य 11/07/2042	मंगल 04/08/2042 राहु 07/10/2042 गुरु 03/12/2042 शनि 09/02/2043 बुध 10/04/2043 केतु 05/05/2043 शुक्र 15/07/2043 सूर्य 05/08/2043 चंद्र 10/09/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

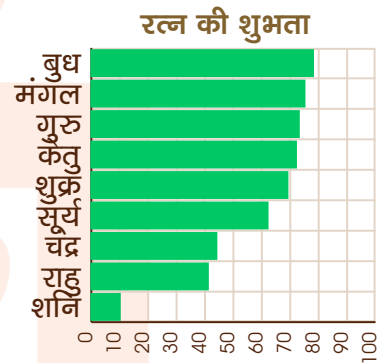
मूलांक	4
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	78%	भाग्योदय, धनार्जन, धन
मूंगा	मंगल	75%	दम्पति, भाग्योदय, सुख
पुखराज	गुरु	73%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	72%	धन, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	69%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	62%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	44%	ग्रह कलेश, व्यय
गोमेद	राहु	41%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
नीलम	शनि	10%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	10/07/2029	69%	19%	75%	91%	73%	75%	10%	41%	72%
केतु	10/07/2036	50%	19%	81%	78%	73%	75%	0%	16%	84%
शुक्र	10/07/2056	50%	19%	75%	84%	73%	81%	22%	52%	78%
सूर्य	11/07/2062	75%	53%	81%	78%	80%	56%	0%	16%	59%
चंद्र	10/07/2072	69%	59%	75%	84%	73%	69%	10%	16%	59%
मंगल	11/07/2079	69%	53%	88%	66%	80%	69%	10%	16%	78%
राहु	10/07/2097	50%	19%	62%	78%	73%	75%	22%	58%	59%
गुरु	11/07/2113	69%	53%	81%	66%	86%	56%	10%	41%	72%
शनि	11/07/2132	50%	19%	62%	84%	73%	75%	35%	52%	59%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/03/2024-29/03/2025	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

दम्पति
धनार्जन
पराक्रम
सुख हानि
सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान

करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्त्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी

नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान्, विजयी, उखभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदरोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(31/03/2024 - 10/07/2029)

बुध की महादशा 31/03/2024 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 10/07/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक-थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय-व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता है। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन-सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा :

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के

दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(25/07/2024 - 31/10/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 31/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 25/07/2024 को प्रारंभ होकर 31/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और भाग्यशाली बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और धर्म में रुचि होगी। समाजसेवा और दान-धर्म में रुचि होगी। अध्यापन, लेखन और अध्ययन के लिए शुभ समय है। छोटे भाई या बहन का विवाह हो सकता है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन, कार्यों की पूर्ति और सौभाग्य का योग है।

आपके जीवनसाथी की लघुयात्राएं हो सकती हैं, सबसे संबंध सुधरेंगे। आपके पिता को सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, अरिष्ट से बचाव होगा। माता के मातहत, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, धन, प्रभावशाली मित्र और सफलता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी सामान बेचने में दक्षता द्वारा धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(31/10/2026 - 10/07/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 31/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 31/10/2026 को प्रारंभ होकर 10/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। महत्वाकांक्षाएं तीव्र होंगी। व्यापार में आय अच्छी होगी। नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। विदेश यात्रा संभव है। विवाह या साझेदारी के कारण जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। संघर्ष के बाद प्रोन्नति हो सकती है। ज्ञानार्जन, धनलाभ और उच्चपद की संभावना है। सम्मान में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी; समृद्ध बनेंगे। दर्शनशास्त्र और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की प्रोन्नति होगी।

महादशा :- केतु
(10/07/2029 - 10/07/2036)

केतु की महादशा 10/07/2029 को आरम्भ और 10/07/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में केतु द्वितीय भाव में स्थित है। केतु की अष्टम भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको लाभ, अच्छी शिक्षा, पारिवारिक सुख और सहे के कार्यों में लाभ हुआ होगा। केतु की इस दशा में आपको सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप आपको संक्रामक बीमारी, विषाणु जाति बुखार, गले में संक्रमण, फोड़ा-फुन्सी, साँस सम्बन्धी बीमारियाँ आदि हो सकती हैं। थोड़ी सतर्कता से इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको विरासती सम्पत्ति अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। सहे से लाभ की सम्भावना भी है व्यवसाय-व्यापार में भी धनोपार्जन अच्छा होगा। जीविका के लिये कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, लेखन, गणित, विदेशी भाषा, दवा, वायु सेना, लेख-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़े, रत्न, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लेखन-सामग्री, किताब, समाचार पत्र, घड़ी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहायकों का सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों की सदेच्छा मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और उनकी आय अच्छी होगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा व्यापार का विस्तार और व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि होगी।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। आपको सुन्दर

वाहन का सुख मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। मामूली नुकसान के प्रति सावधानी बरतें। मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राओं की सम्भावना है जो लाभदायक होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप तेज और क्रियाशील हैं और सभी प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों, कम्प्यूटर-प्रौद्योगिकी, लेखा-कार्य, भोजन प्रौद्योगिकी लेखन, गणित और बैंकिंग में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सफल और समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के जीवन में कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिये आपको कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता को सभी प्रकार का लाभ, वाहन सुख और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि आपके पिता को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का कुछ व्यय होगा, उनकी यात्रा और उनके जीवन में कुछ परिवर्तन होगा जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, तकनीकी शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सभी सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और सम्पत्ति, सुख और सफलता की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में वाहन और मकान की प्राप्ति होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि चंद्र की अन्तर्दशा के दौरान लोकप्रियता और भाई-बहनों से लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यय होगा जबकि राहु कुछ समस्या खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्या और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में सफलता और समृद्धि मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में अच्छी शिक्षा, सट्टे की गतिविधियों में सफलता और सुख मिलेगा।

**अंतर्दशा :- केतु - केतु
(10/07/2029 - 06/12/2029)**

आपके लिए केतु महादशा 10/07/2029 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/07/2029 को प्रारंभ होकर 06/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। रिश्तेदारों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं मगर वे शांतिपूर्वक सुलझ जाएंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क होगा जो लाभकारी रहेगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। साझेदार से लाभ होगा, विरासत में धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में सफलता मिल सकती है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में धन मिल सकता है। आपके पिता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए खर्चे, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लोकप्रिय बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से उत्तम संबंध रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है; अचानक धनागम हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों की व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(06/12/2029 - 06/02/2031)**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपकी आय अच्छी होगी, किस्मत साथ देगी। व्यापार में लाभ होगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है, गया धन वापस आ सकता है। सहकर्मियों और साझेदारों के माध्यम से धनलाभ होगा। उच्चपद और प्रसिद्धि का योग है। आप धनी बनेंगे ; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुखों का भोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता प्रसन्न रहेंगी, उनका जीवन सुख-सुविधापूर्ण होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, प्रसन्नता, ज्ञानार्जन, यात्रा आदि का संकेत है।

आपकी संतान को स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी; उनकी कला में

रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उत्साह से पूर्ण होंगे, सफल बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, सफल होंगे। व्यापारी धनी बनेंगे; आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

